पूर्व स्थापित सामंजस्य (Pre- established Harmony)

सृष्टि में सामंजस्य के क्या कारण हैं? जब सभी चिदणु परस्पर निरपेक्ष और पूर्ण स्वतंत्र हैं तब उनमें संबंध या सहयोग कैसा? तब जगत में नियम, व्यवस्था, एक तंत्र अता कैसे हो सकती है? लाइबनित्ज के लिए यह एक जटिल समस्या है| उन्होंने इस समस्या का समाधान अपने पूर्व स्थापित सामंजस्य के सिद्धांत के द्वारा किया| उन्होंने इसका समाधान ईश्वर की शरण लेकर किया है| ईश्वर ने चिदणुओं की सृष्टि की है| उन्होंने सबको स्वतंत्र बनाया है, किंतु साथ ही सबको एकतंत्र में बांध दिया है| एक चिदणु की स्वतंत्रता दूसरे की स्वतंत्रता का विरोध नहीं करती| प्रत्येक चिदणु अपनी स्वतंत्र सत्ता और विशेषता रखते हुए भी विश्व की एकतंत्रता को क्षुण्ण नहीं करता| सार्वभौम ईश्वर के नियम को उन्होंने ' पूर्वस्थापित सामंजस्य' (Pre-establihed Harmony) कहते हैं| इसकी तुलना उन्होंने विविध वाद्य यंत्रों के एकतान संगीत (Orchestra) से की है, जिसमें प्रत्येक वाद्ययंत्र अपना स्वतंत्र अस्तित्व और स्वर-वैशिष्ट्य रखते हुए भी, अन्य वाद्य यंत्रों के स्वरों में संगति रखता है और इस प्रकार एकतानसंगीत की सृष्टि होती है| सब वाद्य यंत्रों का उद्देश्य एकतानसंगीत है| उसी की पूर्ति वह अपने अपने स्वरों से करते हैं| इसी प्रकार चिदणु- जगत की सृष्टि भी उद्देश्य सहित की गई है| उनमें पूर्वस्थापित सामंजस्य है| सबका लक्ष्य इस सामंजस्य के साथ अपना अपना विकास करना है| चिदणुओं के अस्तित्व के पार्थक्य में लक्ष्य की एकतंत्रता है| उनके द्वैत में सामंजस्य का अद्वैत है| विश्व, भेद में अनुस्युत अभेद या तो द्वैतविशिष्ट अद्वैत है| प्रत्येक चिदणु इस विराट का जीवित अंग है और विराट में जो कुछ हो रहा है वह प्रत्येक चिदणु में प्रतिफलित होता है| सारे चिदणु में एक ही चैतन्य विकास के विविध स्तरों में प्रकट होता है, अतः यह सामंजस्य असंगत नहीं है| सारे चिदणु एक ही चेतना के सूत्र में बंधे हैं जिसकी अभिव्यक्ति प्रत्येक चिदणु अपने स्वतंत्र और विशिष्ट रूप में करता है| ईश्वर ने पहले ही सृष्टि में यह सामंजस्य स्थापित कर दिया है|

इस पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम से लाइबनित्ज ने देह मन संबंध की समस्या का समाधान किया है| देह और आत्मा, जड़ और चेतन नामक दो विरुद्ध द्रव्य या गुण नहीं है| सुप्त चेतन को ही जड़ कहते हैं, अतः इनमें कोई विरोध नहीं| चेतन के अतिरिक्त और कोई सत्ता नहीं| देह के चिदणु- समूह में एक केंद्रीय चिदणु जो अधिक क्रियाशील और अधिक विकसित चैतन्य होता है, आत्मा कहलाता है| सारे चिदणु अपने अंतरंग नियमों के आधार पर विकसित होते रहते हैं| इस विकसित चैतन्य वाले चिदणुओं का अधिक विकसित चैतन्य वाले चिदणुओं की ओर आकर्षण स्वाभाविक है| देह के चिदणु इस प्रकार क्रियाशील होते हैं कि ऐसी प्रतीति होती है मानो वे केंद्रीय आत्म-चिदणु द्वारा शासित हो रहे हो| वास्तव में चिदणु किसी अन्य चिदणु पर साक्षात प्रभाव नहीं डाल सकता क्योंकि चिदणु छिद्ररहित है प्रत्येक चिदणु अपने नियम पर चल रहा है| ईश्वर ने पहले ही सामंजस्य की स्थापना करके प्रत्येक चिदणु को इस प्रकार नियंत्रित कर दिया है कि उनमें संगति प्रतीत होती रहे| देह के चिदणु और आत्म-चिदणु परस्पर निर्भर नहीं है और ना उनमें कोई क्रिया प्रतिक्रिया ही हो सकती है और ना यह समानांतर गुण ही है| इनमें केवल पूर्व स्थापित एकतंत्रता है| देकार्त ने देह और आत्मा को दो स्वतंत्र द्रव्यमान कर उनमें क्रिया प्रतिक्रिया संबंध माना| स्पिनोजा ने इनको एक ही द्रव्य के गुण मात्र मानकर इनकी दो समानांतर धाराएं बतलाई| लाइबनित्ज ने कहा कि ना तो यह भिन्न द्रव्य हैं जिनमें क्रिया प्रतिक्रिया हो सके और ना यह दो भिन्न कौन है जो समानांतर हो| इनमें ना तांत्रिक भेद है, ना गुण| यह तो एक ही चैतन्य की जागृत और सुप्त अवस्थाएं हैं| ईश्वर समर्थ है और उन्होंने एक ही बार इनमें पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम बना दिया जिसके अनुसार यह सदा चलते रहते हैं| देह और आत्मा दो घड़ियों की समान हैं जो सदा एक सा समय बताते हुए चलती हैं|

ईश्वर सृष्टि करता है| उन्होंने संपूर्ण चिदणुओं की सृष्टि करके उनमें सामंजस्य स्थापित कर दिया है| सृष्टि का विकास क्रम ईश्वर द्वारा पहले ही निर्धारित हो चुका है| कोई चित इस सार्वभौम नियम का हैप्पी उल्लंघन नहीं कर सकता| ईश्वर केवल पूर्णतम चिदणु या पुरुषोत्तम ही नहीं है, वे चिदणुओं के भी चिदणु हैं| वे चिदणु- सृष्टि के ऊपर हैं|

लाइबनित्ज, देकार्त और स्पिनोजा के समान बुद्धिवादी हैं| लाइबनित्ज देकार्त और लॉक की बुद्धिवाद और इंद्रिय अनुभववाद में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया और इस प्रयास में वह कांट के पुरोगामी बने|